Copyright © - Shri Vedanta Civil Services Academy

मध्यप्रदेश का राजनैतिक परिचय

1. **विधानसभा सदस्य संख्या** – **231 (230+1)** (1956 में 288 थी)

   इनमें से **अनुसूचित जाति** – **35 सीटें** एवं

   अनुसूचित जनजाति – **47 सीटें** के लिए आरक्षित है।

2. **म.प्र. मे संसद सदस्यों की कुल संख्या** – **40**

   लोकसभा सदस्यो की संख्या – **29**

   राज्यसभा सदस्यों की संख्या – **11** है,

   (जिसमें लोकसभा की **4 सीटें**–**अनुसूचित जाति** व **6 सीटें** –**अनुसूचित जनजाति** कि लिए आरक्षित है।)

3. **विधानसभा अध्यक्ष** – **गिरीश गौतम**
4. **विधानसभा उपाध्यक्ष** – **पद रिक्त**
5. **विपक्ष नेता या नेता प्रतिपक्ष** – **कमलनाथ**
6. **कुल जिले** – **52 (52वे जिले के रूप मे टीकमगढ़ से अलग हुए निवाड़ी को 1 अक्टूबर 2018 को अधिकारिक रूप से सहमति दी गई)**

नोट – (नवनिर्मित निवाड़ी जिले मे तीन तहसीले ओरछा, पृथ्वीपुर और निवाड़ी सम्मिलित है इसका क्षेत्रफल 1317.45 वर्ग कि.मी. होगा इसे टीकमगढ से विभाजित करके बनाया गया है यह मध्यप्रदेश का क्षेत्रफल व जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटा जिला है।)

7. **कुल तहसीलें** – **412**
8. **कुल विकासखण्ड (जनपद पंचायत)** – **313 (आदिवासी विकासखंड 89)**
9. **कुल नगर** – **476**
10. **ग्राम** – **54,903** जिनमें से **52,117** आबाद ग्राम है।
11. **नगर निगम**– **16** (दतिया एवं भिण्ड नगर निगम के लिए प्रस्तावित है)

    नोट– पहला नगर निगम **जबलपुर** था जो के **1864** में गठित किया गया था।

12. **नगरपालिकाएँ** – **98** (लगभग)। पहली 1907 में –**दतिया**
13. **नगर पंचायत** – **264**
14. **ग्राम पंचायते** – **23,012**
15. **जिला पंचायत** – **52**
17. **जनसंख्या** – **7,26,26,809**

    पुरूष – **3.76 करोड लगभग (51.70 प्रतिशत)**

    महिलाएँ – **3.50 करोड लगभग (48.30 प्रतिशत)**

18. **नगरीय जनसंख्या** – **2 करोड लगभग** (कुल जनसंख्या का **27.60 प्रतिशत)**
19. **ग्रामीण जनसंख्या** – **5.25 करोड लगभग (72.40 प्रतिशत)**

मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या **43.50 प्रतिशत** हैं।

सर्वाधिक जनसंख्या वाले जिले :–

1. इन्दौर 2. जबलपुर 3. सागर

न्यूनतम जनसंख्या वाले जिले :–

1. निवाड़ी 2. हरदा 3. उमरिया

क्षेत्रफल में सबसे बड़े जिले :–

1. छिन्दवाड़ा 2. शिवपुरी 3. सागर

क्षेत्रफल में सबसे छोटे जिले :–

1. निवाड़ी 2. दतिया 3. भोपाल

लिंगानुपात (Sex Ratio)

मध्यप्रदेश का – **931** प्रति 1000

राष्ट्रीय लिंगानुपात – **943** प्रति 1000

सर्वाधिक लिंगानुपात वाले जिले :–

1. बालाघाट (1021) 2. अलीराजपुर **(1011)**

3. मण्डला **(1008)** 4. डिण्डोरी **(1002)**

नोट – उपर्युक्त दिए गए म.प्र. के 4 जिलो का लिंगानुपात 1000 से अधिक है।

न्यूनतम लिंगानुपात वाले जिले :–

1. भिण्ड (837) 2. मुरैना **(840)** 3. ग्वालियर **(864)**

नोट– 0–6 वर्ष आयु वर्ग में सबसे कम लिंगानुपात **मुरैना** व सबसे अधिक **अलीराजपुर** का है।

जनसंख्या घनत्व

236 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.

सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व :– **1. भोपाल (855)** 2. इन्दौर (841) 3. जबलपुर (473)

सबसे कम जनसंख्या घनत्व :– **1. डिण्डोरी (94)** 2. श्योपुर (104) 3. पन्ना (142)

साक्षरता

कुल साक्षरता :– 69.32 प्रतिशत

पुरूष साक्षरता :– 78.7 प्रतिशत

महिला साक्षरता :– 59.2 प्रतिशत

सबसे अधिक साक्षरता :– **1. जबलपुर** 2. इन्दौर 3. भोपाल

सबसे कम साक्षरता :– 1. **अलीराजपुर (भारत का सबसे कम साक्षरता वाला जिला)**

2. झाबुआ

3. बड़वानी

Note- **सबसे अधिक पुरूष साक्षरता – इन्दौर**

सबसे कम – अलीराजपुर

सबसे अधिक महिला साक्षरता – भोपाल

सबसे कम – अलीराजपुर

मध्यप्रदेश में शिक्षा

मध्यप्रदेश में 2011 की जनगणना के अनुसार –

साक्षरता का प्रतिशत – 69.3 प्रतिशत है।

पुरूष – 78.7 प्रतिशत

महिला – 59.2 प्रतिशत

विद्यालयों और स्कूलों की संख्या –

प्रायमरी स्कूल	–	**83,412**
माध्यमिक स्कूल	–	**28,480**
उच्चतर माध्यमिक स्कूल	–	**12,121**
प्राथमिक शिक्षा केन्द्र	–	**1,05,600**
महाविद्यालय	–	**405 लगभग** (इंजीनियरिंग कॉलेज शामिल नहीं है।)

उच्च शिक्षा –

- कुल विश्वविद्यालय 18 और 5 प्रस्तावित है, जिनके अंतर्गत **309** शासकीय कॉलेज, **483** अशासकीय कॉलेज और **9** कॉलेज राजकीय अनुदान द्वारा संचालित है।
- मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम की स्थापना 1968 मे की गई जो स्कूल स्तर की पुस्तके प्रकाशित करता है।

जनसंख्या वृद्धि दर

मध्यप्रदेश की जनसंख्या वृद्धि दर **20.35 प्रतिशत** है। (**भारत की 17.8 प्रतिशत**)

सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि वाले जिले :–

1. इन्दौर (32.9%) 2. झाबुआ 3. भोपाल

सबसे कम जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले –

1. अनूपपुर (12.3%) 2. बैतूल 3. छिन्दवाड़ा

कुछ तथ्य :– 2011 की रिपोर्ट के अनुसार म.प्र. में –

(a) जन्मदर – **27.9 / 1000** (b) मृत्युदर – **8.3 / 1000** (c) शिशु मृत्युदर – **62 / 1000**

मध्यप्रदेश का राजकीय गान

"सुख का दाता, सबका साथी। शुभ का यही संदेश है।
मॉ की गोद, पिता का आश्रय। मेरा (अपना) मध्यप्रदेश है।"

लेखक– महेश श्रीवास्तव **गायक– शान**

मध्यप्रदेश का गठन एवं निर्माण

1956 से पूर्व म.प्र. ब्रिटिश काल में ''सेन्ट्रल प्रोविसेस'' और ''बरार'' नाम से जाना जाता था। स्वतंत्रता पश्चात म.प्र. को थ्री स्टेट – A, B तथा C में बॉटा गया सेन्ट्रल प्रोविन्स तथा बरार में छत्तीसढ़ और बघेलखण्ड को मिलाकर पार्ट A (स्टेट A) बनाया गया। इसके प्रथम मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल और राज्यपाल ई. राघवेन्द्र राव थे। इंदौर और ग्वालियर सहित 26 रियासतों को मिलाकर पार्ट B (स्टेट B) बनाया गया इसका नाम **मध्य भारत** संघ रखा गया, इसकी विधानसभा में 99 सदस्य थे यहां के पहले राजप्रमुख जीवाजीराव सिंधिया और मुख्यमंत्री लीलाधर जोशी थे। उत्तर की रियासतों को मिलाकर पार्ट C (स्टेट C) के अंतर्गत विन्ध्य प्रदेश बनाया गया जिसके प्रमुख राजा मार्तण्ड सिंह और पहले मुख्यमंत्री शंभुनाथ शुक्ल थे। इसकी विधानसभा 60 सदस्यीय थी। भोपाल पार्ट C का भाग था, 30 सदस्यीय भोपाल विधानसभा के पहले मुख्यमंत्री शंकरदयाल शर्मा थे।

स्टेट	राजधानियॉ
स्टेट A	नागपुर
स्टेट B	ग्वालियर, इन्दौर
स्टेट C	रीवा
महाकौशल क्षेत्र	जबलपुर

1956 की स्थिति जस्टिस फजल अली की अध्यक्षता 1953 में गठित राज्य पुनर्गठन आयोग की अनुशंसा पर **1 नवम्बर 1956** को नवीन म.प्र. का गठन हुआ। राज्य पुर्नगठन आधार पर राज्य की सीमाओं में निम्नलिखित परिवर्तन किये गये।

- बुलढ़ाना अकोला अमरावती यवतमाल वर्धा नागपुर भण्डारा और चाँदा (मराठी भाषी जिले) को तत्कालीन मुम्बई राज्य महाराष्ट्र में मिला दिया गया शेष **Part-A** का भाग वर्तमान म.प्र. का भाग बना।
- मंदसौर जिले की भानपुरा तहसील के सुनलटप्पा को छोड़कर शेष भाग को **मध्यप्रदेश** में मिला लिया गया ।
- राजस्थान के कोटा जिले की सिरोंज तहसील को म.प्र. के विदिशा जिले में लाया गया।
- शेष **Part-B** का हिस्सा वर्तमान म.प्र. का अंग है ।
- **Part-C** State विंध्यप्रदेश का पूरा भाग वर्तमान म.प्र. में मिलाया गया।
- भोपाल राज्य भी वर्तमान म. प्र. का अंग बना।

नवीन म.प्र. की राजधानी भोपाल को बनाया गया जो पूर्व में सीहोर जिले की एक तहसील थी। नवनिर्मित म.प्र. में 43 जिले थे, जिलों का पुनगठन के द्वारा 26 जनवरी 1972 को भोपाल और राजनांदगांव दो नये जिले बने और जिलों का संख्या 45 हो गई। बी आर दुबे की अध्यक्षता में समिति की सिफारि"ा पर वर्ष 1998 मे 10 नय जिले बनें एंव 6 और जिले 1998 में गठित सिंहदेव समिति की सिफारिश पर बनाये गये, इस प्रकार जिलों की संख्या 61 हो गई।

31 अक्टूबर, 2000 को मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ अलग होने से 16 जिले नवीन राज्य में चले गये और मध्यप्रदेश में पुनः जिलों की संख्या 45 हो गई। वर्ष 2003 में जिले बुरहानपुर (खंडवा से), अनुपपुर (शहडोल से) तथा अशोकनगर (गुना से) का गठन किया गया, जिससे प्रदेश में जिलों की संख्या 48 हो गई। वर्ष **2008** में प्रदेश सरकार द्वारा झाबुआ से अलग कर अलीराजपुर तथा सीधी से अलग कर सिंगरौली को जिला बनाया गया और प्रदेश में जिलों की संख्या 50 हो गई। मध्यप्रदेश सरकार ने वर्ष 2013 में शाजापुर जिले से पृथक कर **आगर–मालवा** नाम से एक नया जिला गठित किया 1 अक्टूबर 2018 को 52वे जिले के रूप मे टीकमगढ़ से पृथक होकर **निवाड़ी** नया जिला गठित किया गया, इसे मिलाकर वर्तमान में प्रदेश में जिलों की संख्या **52** हो गई।

1947 में मध्यप्रदेश की स्थिति

मध्यप्रदेश का गठन – स्वतंत्रता के पूर्व मध्यप्रदेश को **मध्यभारत या मध्यप्रांत** कहा जाता था। **1956** तक इसका नाम मध्यभारत रहा। यह 3 भागों में बँटा हुआ था –

1) **भाग A** :– इसे वास्तविक रूप से मध्यप्रांत (Central Provinces) या **बरार** कहा जाता था। इसके अंर्तगत छत्तीसगढ़ महाकौशल (जबलपुर) तथा विदर्भ (नागपुर के पास) की रियासते शामिल थी। इसकी **राजधानी– नागपुर** थी। यहां के **प्रथम मुख्यमंत्री**– पण्डित रविशंकर शुक्ल थे।

2) **भाग B** :– इसे **Middle India** या **मध्य भारत** के नाम से जाना जाता था और इसकी 2 राजधानिया थी। (6–6 माह के लिए) 1948 में यहां के राज प्रमुख **जीवाजी राव सिंधिया** थे।

1. **इंदौर** (ग्रीष्मकालीन राजधानी)
2. **ग्वालियर** (शीतकालीन राजधानी)

3) **भाग C** :– इसे **विंध्य क्षेत्र या विंध्य प्रदेश** के नाम से जाना जाता है जिसमें बुन्देलखण्ड़ व बघेलखण्ड़ की लगभग **38 रियासतें** शामिल थी और इसकी राजधानी **रीवा** बनाई गई।

4) **भोपाल** :– भोपाल **भाग C** का ही भाग था

राजधानी – भोपाल, जो कि सीहोर जिले की एक तहसील था

नोट – भोपाल **26 Jan 1972** में जिला बना।

1953 में 3 सदस्यी राज्य पुनगठन आयोग गठित किया गया –

जिसके सदस्य – 1. जस्टिस फजल अली (अध्यक्ष) 2. के. एम. पणिक्कर 3. हृदयनाथ कुंजरु

इस कमेटी की सिफारिशो के बाद 1 नबम्बर, 1956 में म.प्र. नये राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। इसमें पुराने क्षेत्रों में कुछ परिर्वतन किए गए–

- बुल्ढ़ाना, अकोला, अमरावती, यवतमाल, वर्धा, नागपुर भंडारा, चांदा (मराठी भाषी जिले) के तत्कालीन जिले मुम्बई राज्य को दे दिये, शेष पार्ट "A" का भाग म.प्र. में लिया गया।
- मंदसौर जिले की भानपुरा तहसील (सुनेलटप्पा को छोड़कर) के अतिरिक्त शेष भाग म.प्र. में शामिल कर लिया गया।
- राजस्थान के कोटा जिले की सिरोंज तहसील म.प्र. के विदिशा जिले में जोड़ दी गयी और पार्ट "B" का संपूर्ण क्षेत्र म.प्र. में मिला लिया गया
- पार्ट C अर्थात् रीवा का पूरा भाग म.प्र. में मिला लिया गया साथ ही भापाल को भी पार्ट C राज्य में शामिल कर लिया गया।

1 नवंबर 1956 को **भोपाल** को **मध्यप्रदेश की राजधानी** बनाया गया जो कि उस समय सीहोर को एक तहसील थी। गठन के समय प्रदेश में कुल **43 जिले** थे। **1972** में **भोपाल व राजनांदगॉव** नए जिले बनाए गए और जिलों की संख्या बढ़कर **45** हो गई। **पंडित नेहरू** ने **मध्यप्रदेश** को **भारत का हृदय प्रदेश** कहा था।

1983 में **B.R. दुबे** की अध्यक्षता में **जिला पुनगंठन आयोग** (District Recorganization Commission) गठित किया गया और इसकी अनुशंसा पर **1998** में ही **10** जिले बनाये गये और जिलों कि संख्या बढ़कर **55** हो गई, किन्तु कुछ समय बाद ही **सिंहदेव कमेटी** की सिफारिश के बाद **6** जिले और शामिल कर लिए गए और जिलों की संख्या बढ़कर **61** हो गई।

दुबे (दबे) कमेटी की सिफारिशों के बाद बने म.प्र. के जिले –

1. बडवानी (खरगोन जिले से)।
2. श्योपुर (मुरैना जिले से)।
3. कटनी (जबलपुर जिले से)
4. डिण्डोरी (मण्डला से)।

10 में से **4** मध्यप्रदेश में है, शेष **6 छतीसगढ़** में चले गए है।

सिंहदेव कमेटी की सिफारिश पर बने म.प्र. के जिले –

1. हरदा (होशंगाबाद से)।
2. नीमच (मंदसौर जिले से)।
3. उमरिया (शहडोल जिले से)

बाकी अन्य जिले **छत्तीसगढ़** में स्थित है।

- **1 नवंबर 2000** को म.प्र. का विभाजन हो गया (मुख्यमंत्री – दिग्विजय सिंह) और म.प्र. के **16** जिलों को अलग कर छत्तीसगढ़ बनाया गया, परिणामस्वरूप प्रदेश में केवल **45** जिले शेष रह गए। छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री – अजोत जोगी बने। 1 नवंबर 2000 को मध्यप्रदेश का वर्तमान स्वरूप प्राप्त हुआ है।
- **15 अगस्त 2003** में म.प्र में 3 नए जिले बनाए गए –

  1. अशोकनगर (गुना से) 2. बुरहानपुर (खंडवा से) 3. अनूपपुर (शहडोल से)
- इसी प्रकार **2008** में 17 मई को **झाबुआ से अलीराजपुर,** 24 मई को **सीधी से सिंगरौली, 2** नए जिलों का गठन किया गया और जिलों की संख्या बढ़कर **50** हो गई।
- **16 अगस्त, 2013** में **शाजापुर** से अलग कर **"आगर"** नाम का जिला बनाया गया।
- **1 अक्टूबर 2018** को नया जिला **निवाड़ी** टीकमगढ़ से पृथक होकर अस्तित्व मे आया, इसी प्रकार अब वर्तमान में कुल **52** जिले है।

नोट– केवल **सिंगरौली** जिले का जिला मुख्यालय **बैढ़न** में स्थित है।

प्रस्तावित जिले **-**

- ❒ मैहर (सतना से)
- ❒ नागदा (उज्जैन से)
- ❒ बागली (देवास से)
- ❒ चाचौड़ा (गुना)

म.प्र के संभाग

मध्यप्रदेश में कुल **10** संभाग है। **11वॉ** संभाग छिंदवाडा है, किन्तु इस संबंध में अभी तक कोई शासकीय अधिसूचना जारी नही हुई है। 27 अगस्त 2007 को भोपाल संभाग से अलग करके होशंगाबाद संभाग का गठन किया गया इसी प्रकार 14 जून 2008 को रीवा और जबलपुर संभाग के कुछ जिलो को मिलाकर शहडोल संभाग गठित किया गया।

❖ **कलेक्टर, संभाग आयुक्त** (Divisional Commissioner) के नियंत्रण में ही कार्य करता है।

1. जबलपुर– क्षेत्रफल में **सबसे बड़ा** संभाग है। इसमें कुल **8 जिले** है –

1. जबलपुर 2. कटनी 3. बालाघाट 4. मंडला
5. सिवनी 6. डिण्डौरी 7. छिदंवाडा 8. नरसिंहपुर

2. इंदौर– जनसंख्या में **सबसे बड़ा** संभाग है। कुल **8 जिले** है –

1. इंदौर 2. झाबुआ 3. अलीराजपुर 4. बडवानी
5. बुरहानपुर 6. धार 7. खरगोन 8. खण्डवा

3. भोपाल– 5 जिले है –

1. राजगढ़ 2. भोपाल **3.** विदिशा 4. सीहोर
5. रायसेन

4. ग्वालियर– इसमें **5 जिले** है–

1. शिवपुरी 2. ग्वालियर **3.** गुना 4. अशोकनगर
5. दतिया

5. रीवा– इसमें **4 जिल** है –

1. रीवा 2. सतना 3. सीधी 4. सिंगरौली

6. उज्जैन– इसमें **7 जिले** है –

1. उज्जैन 2. देवास 3. मंदसौर 4. नीमच
5. शाजापुर 6. आगर मालवा 7. रतलाम

7. सागर– इसमें **6 जिल** है –

1. सागर 2. दमोह 3. टीकमगढ़ 4. छतरपुर
5. पन्ना 6. निवाड़ी

8. चंबल– इसमें **3 जिले** है –

1. भिण्ड 2. मुरैना 3. श्योपुर

नोट– चंबल संभाग का **मुख्यालय – ग्वालियर** में है। **क्षेत्रफल** में यह **सबसे छोटा** संभाग है।

9. नर्मदापुरम् – 3 जिले है –

1. नर्मदापुरम 2. हरदा 3. बैतूल

10. शहडोल– 3 जिले ह – यह **जनसंख्या** में **सबसे छोटा** संभाग है।

1. शहडोल 2. उमरिया 3. अनूपपुर

मध्यप्रदेश विधानसभा

मध्यप्रदेश राज्य का गठन 1 नवंबर 1956 में मध्यप्रांत एवं बरार में विंध्यप्रदेश, मध्य भारत, मध्य भारत संघ, महाकौशल और भोपाल राज्य की विधानसभाओं को शामिल करके किया गया था। इन सभी विधानसभाओं को एकीकृत कर इन्हे भोपाल के मिन्टो हॉल में बैठको के लिए आमंत्रित किया गया और तभी से 1996 तक मिंटो हॉल ही मध्यप्रदेश की विधानसभा लगी। इसे पुरानी विधानसभा के नाम से भी जाना जाता है। नवंबर 2021 में मिंटो हॉल का नाम बदलकर कुशाभाई ठाकरे हॉल किया गया है।

मिंटो हॉल :– मिंटो भवन का निर्माण 1909 में सुल्तान जहां बेगम ने वायसराय लार्ड मिंटो के नाम पर प्रारंभ कराया था। यह 24 सालों में पुरी तरह बनकर तैयार हुआ और इसे बनाने में उस समय 5 लाख रूपये का खर्च लगा था। इस भवन के प्रधान वास्तुकार एक अंग्रेज ए. सी. रबेन थे। मुख्यतः यह अतिथि ग्रह के रूप में प्रयोग किया जाता था किंतु बाद में इसे नवाब की सेना मुख्यालय, आर्थिक सलाहकार, दफ्तर, पुलिस मुख्यालय एवं होटल के रूप में प्रयोग किया गया।

1946 में यहा हमीदिया कॉलेज की स्थापना की गई और 1956 तक यह कॉलेज के रूप में ही प्रयोग हुआ लेकिन 1 नवंबर 1956 में यह मध्यप्रदेश विधानसभा भवन के रूप में स्थापित हुआ।

इंदिरा गांधी विधानसभा भवन :– मध्यप्रदेश का नया विधानसभा इंदिरा गांधी विधानसभा भवन के नाम से जाना जाता है। इसका शिलान्यास 14 मार्च 1981 को तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ द्वारा किया गया जबकि 1996 में यह बनकर तैयार हुआ जिसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने 3 अगस्त 1996 में किया।

अरेरा हिल्स पर स्थित विधानसभा के निर्माण पर 54 करोड़ रूपये का खर्च आया था। यह पुरी तरह वृत्ताकार है और प्रारंभ में इसमें 366 सदस्यों की बैठक की व्यवस्था थी किंतु वर्तमान में इसकी क्षमता 250 सदस्य की है यह 6 सेक्टर्स में विभाजित हैं। इसका एक पुस्तकालय भी है जिसमें गांधी नेहरू कक्ष स्थित हैं।

मध्यप्रदेश का गठन

मध्यप्रदेश का गठन 1 नवंबर 1956 में फजल अली आयोग की अनुशंसा पर हुआ किंतु इस आयोग ने जबलपुर को केन्द्रीय स्थिति होने के कारण राजधानी के रूप में प्रस्तावित किया था। यद्यपि जवाहरलाल नेहरू ने इसके लिए भोपाल का सुझाव दिया। अतः अनेक कार्यालय होने के कारण भोपाल को राजधानी बनाया गया। मध्यप्रदेश का गठन विंध्यप्रदेश मध्यभारत संघ एवं भोपाल की विधानसभाओं को मिलाकर किया गया हैं।

विंध्यप्रदेश विधानसभा :– 4 अप्रैल 1948 में विंध्यप्रदेश का गठन किया गया। प्रारंभ में यह पॉर्ट 'C' का भाग था और यहां के पहले राजप्रमुख राजा मार्तण्ड सिंह थे। 1952 में यहा की विधानसभा के 60 सदस्यों के चुनाव हुआ।

- ❒ पहले मुख्यमंत्री – शंभुनाथ शुक्ल
- ❒ विधानसभा अध्यक्ष – श्री शिवानंद

यह विधानसभा रीवा शहर में स्थित थी और इसका कार्यकाल लगभग साढ़े चार वर्ष रहा।

भोपाल विधानसभा :– 1952 के पूर्व कमोश्नरी शासन व्यवस्था थी और यह एक मुख्य आयुक्त द्वारा संचालित होता था। 1949 में इसे पार्ट 'C' में शामिल किया गया और 1962 में यह 30 सदस्यीय विधानसभा गठित हो गई थी।

- ❒ पहले मुख्यमंत्री – डॉ. शंकरदयाल शर्मा
- ❒ विधानसभा अध्यक्ष – श्री सुल्तान मोहम्मद खान
- ❒ कार्यकाल – साढ़े चार वर्ष

मध्य विधानसभा :– मध्य भारत संघ का निर्माण 18 मई 1948 को ग्वालियर, इंदौर और मालवा की 26 रियासतों को मिलाकर किया गया था। यही के पहले राजप्रमुख जीवाजीराव सिंधिया थे। यह विधानसभा ग्वालियर में स्थित थी और इसमें 99 सदस्य थे। भारतोय संघ के अंतर्गत यह पार्ट 'B' का भाग था। 1952 की पहली विधानसभा में कुल 99 सदस्य थे।

- ❒ पहले मुख्यमंत्री – श्री लीलाधर जोशी

- ❒ राज्यपाल – तख्तमल जैन
- ❒ विधानसभा अध्यक्ष – अच्यूत पटवर्धन

मध्य प्रांत विधानसभा :– यह नागपुर में स्थित थी और 1956 में इसमें पार्ट 'A' के महाकौशल और छत्तीसगढ़ के क्षेत्र को मिलाकर मध्यप्रदेश की विधानसभा में शामिल किया गया था। 1952 में यहा विधानसभा गठित की गई।

- ❒ पहले मुख्यमंत्री – श्री रविशंकर शुक्ल
- ❒ राज्यपाल – ई. राघवेन्द्र राव

अतः इन सभी विधानसभाओं को राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर एकीकृत किया गया और वर्ष 1957 में मध्यप्रदेश विधानसभा का गठन हुआ। उस समय विधानसभा में कुल 288 सदस्य थे। 1976 में यह संख्या 296 और 1999 में 320 कर दी गई। 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य का गठन हुआ जिससे सीटों की संख्या 230 रह गई।

विधानसभा अध्यक्ष

- ❒ पहली विधानसभा के अध्यक्ष एवं प्रोटेम अध्यक्ष – काशीप्रसाद पाण्डे
- ❒ पहले विधानसभा के अध्यक्ष – कुंजीलाल दुबे
- ❒ 15वीं विधानसभा के प्रोटेम स्पीकर – दीपक सक्सेना

1. **कुंजीलाल दुबे** :– मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर निवासी कुंजीलाल दुबे को मध्यप्रदेश का विधि पुरूष भी कहा जाता है। इन्हे 1964 में पद्मभूषण पुरस्कार भी मिला। ये 1956–75, 1957–62, 1962–67 तक मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष रहे अर्थात् सबसे लंबे समय तक अध्यक्ष रहे।
2. **काशीप्रसाद पाण्डे (1967–72)** :– इनकी अध्यक्षता में ही मध्यप्रदेश में पहली पंचायतीराज समिति बनाई गयी थी और इन्ही की सलाह पर मध्यप्रदेश में पंचायतीराज को अपनाया गया।
3. **तेजलाल टेंभरे – 1972–72**
4. **गुलशेर अहमद – 1972–77**
5. **मुकुन्द नेवालकर – 1977–80**
6. **यक्षदत्त शर्मा (1980–83)** :– पहले अध्यक्ष जिनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया।
7. **रामकिशोर शुक्ला – 1984–85**
8. **राजेन्द्र प्रसाद शुक्ला – 1985–90**
9. **ब्रजमोहन मिश्र – 1990–93**
10. **श्रीनिवास तिवारी – 1990–99**
11. **ईश्वरदास रोहाणी – 2003–2009 एवं 2009–2013** (मृत्यु पद पर रहते हुए)
12. **सीताराम शर्मा – 2014–2019**
13. **नर्मदा प्रसाद प्रजापति – 2019–21**
14. **गिरीश गौतम – 2021 – वर्तमान**

विपक्ष का नेता

यह कोई संवैधानिक पद नही है और सामान्यतः विपक्षी पार्टीयों में से किसी एक पार्टी जिसे सदन की सदस्य संख्या का 1/10 से अधिक सीटें मिली हो, उसके नेता को विपक्ष का नेता बना दिया जाता हैं।

मध्यप्रदेश में विपक्ष के नेता का पद 1956 से ही था किंत प्रथम दो विधानसभाओं में कांग्रेस के अलावा किसी भी पार्टी को 1/10 से अधिक सीटें नही मिली इसलिए विपक्ष के नेता की मान्यता तीसरी विधानसभा से मानी जाती हैं। यद्यपि प्रथम दो में से भी विपक्ष के नेता थे।

विपक्ष का नेता :–

1. विश्वनाथ यादवराव तामस्कर –
2. चंद्रप्रताप तिवारी (1956–62)
3. वीरेन्द्र कुमार सकलेचा (1962–67) पहले मान्यता प्राप्त, पहले उपमुख्यमंत्री
   वीरेन्द्र कुमार सकलेचा (1967–72)
4. श्यामाचरण शुक्ल (1967–72) (मुख्यमंत्री)
   द्वारिका प्रसाद मिश्र (1967–72) (मुख्यमंत्री)
   बसंत सदाशिव प्रधान (1967–72)
5. कैलाश जोशो (1972–77) (मुख्यमंत्री)
6. अर्जुन सिंह (1977–80) (मुख्यमंत्री)
7. सुंदरलाल पटवा (1980–85) (मुख्यमंत्री)
8. कैलाश जोशी (1985–90) (मुख्यमंत्री)
9. श्यामाचरण शुक्ल (1990–93) (मुख्यमंत्री)
10. विक्रम वर्मा (1993–98)
11. डॉ गौरीशंकर शेजवार (1998–2002)
12. श्रीमती जमुना देवी (2003–2008) पहली महिला विपक्ष नेता
13. श्रीमती जमुना देवी (2008–10)
14. अजय सिंह (2010–13)
15. सत्यदेव कटारे (2013–18)
16. अजय सिंह (2018)
17. गोपाल भार्गव (2019–21)
18. श्री कमलनाथ (2021–वर्तमान)

मध्यप्रदेश के विधानसभा उपाध्यक्ष

प्रथम – विष्णु विनायक सरवटे

मध्यप्रदेश में पहले विधानसभा चुनाव

1956 में सर्वसहमति से मध्यप्रांत के मुख्यमंत्री रविशंकर शुक्ल को नवगठित मध्यप्रदेश का पहला मुख्यमंत्री चुना गया था। जबकि मध्यप्रदेश विधानसभा के प्रथम चुनाव 1957 में आयोजित हुए जो 286 सीटों पर थे।

चुनाव में चार राष्ट्रीय राजनैतिक दल थे –

1. इण्डियन नेशनल कॉग्रेंस
2. भारतीय जनसंघ
3. कम्यूनिष्ट पार्टी ऑफ इण्डिया
4. इण्डिया प्रजा सोशलिस्ट पार्टी

क्षेत्रीय दल :–

1. हिन्दू महासभा
2. रामराज्य परिषद्
3. अनुसूचित जाति संघ

इन चुनावों में 15 महिलाएं भी शामिल हुई थी।